Academy of Democratic Modernity

लोकतांत्रिक संघवाद

सिद्धांत और अभ्यास का संक्षिप्त परिचय

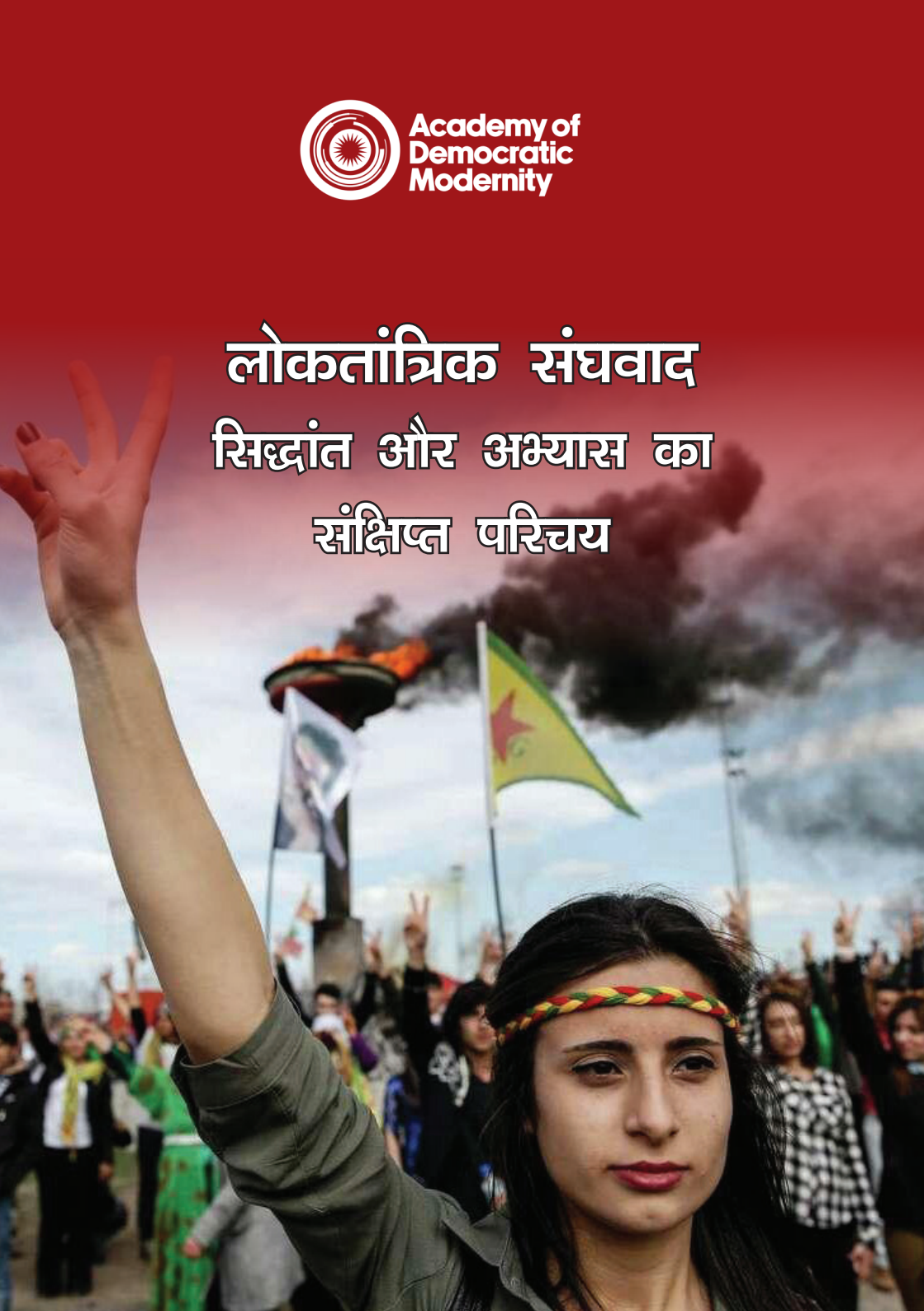

Academy of Democratic Modernity

लोकतांत्रिक संघवाद

सिद्धांत और अभ्यास का संक्षिप्त परिचय

विषय-तालिका

प्रस्तावना	5
1-कुर्दिस्तान के विषय में	7
2. कुर्दिस्तान कामगार पार्टी का संघर्ष	9
3. कुर्द और राष्ट्र-राज्य में	10
4. लोकतंत्रीय संघवाद	10
क. राजनीतिक परिदृश्य की विविधता और सहभागिता	11
ख. समाज की विरासत और ऐतिहासिक ज्ञान का संचय	11
ग. नैतिक और राजनीतिक समाज	12
घ. लोकतांत्रिक संघवाद और लोकतंत्रीय राजनीति	13
ड़. लोकतंत्रीय संघवाद और आत्मरक्षा	15
च. लोकतंत्रीय संघवाद बरक्स नेतृत्व की चाह	18
छ. विश्व लोकतंत्रीय परिसंघ संघ	17
ज. निष्कर्ष	17
5. लोकतंत्रीय संघ के सिद्धांत	16
6. लोकतंत्रीय संघवाद अभ्यास में	19
क. उत्तरी कुर्गिस्तान में लोकतांत्रिक स्वायत्तता	19
ख. लोकतंत्रीय संघवाद के कद्र की तरह मेक्समूर कैंप	20
ग. नरसंहार का उत्तर- सगल में यज़ीदियों की लोकतांत्रिक स्वयं-संस्था	21
घ. उत्तरी और पूर्वी सीरिया का स्वायत्त प्रशासन (रोजावा)	22
ड़. बासुर और राझेलात में लोकतांत्रिक स्वायत्तता के लिए संघर्ष	23
लेखक अब्दुल्ला ओकलान के विषय में	25
लोकतांत्रिक आधुनिकता अकादमी के विषय में	26

प्रस्तावना

कुर्द समाज, राष्ट्रवादी विचारधाराओं के खतरे की गहराईयों को जानने के लिए अच्छी तरह से तैयार है। उनकी क्षेत्र को यूरोपीय उपनेविशी शक्तियों द्वारा विभाजित किया गया, और उनके लोग आस आस के देशों-राज्यों द्वारा सताए गए। कुर्दिस्तान म राज्य संस्थाओं ने हिंसा को बहुत ही कठोर तरीके से अंजाम दिया गया है। कुर्द लोगों का इतिहास प्रतिरोध का इतिहास है जिसम अनगिनत विद्रोह और कत्लेआम हुए। यह इतिहास आज भी कुर्द स्वतंत्रता आंदोलन और लोकतांत्रिक आधुनिकता के आदर्शों द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। यह न केवल कुर्दिस्तान म प्रतिरोध की ज्वाला को प्रज्वलित कर रहा है, बल्कि स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष के लिए नए दृष्टिकोण भी प्रस्तुत कर रहा है। कुर्दिश स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख सिद्धांतकार और नेता अब्दुल्ला ओजालन द्वारा दिया गया यह प्रस्ताव, मध्य पूर्व के नवउदारवादी पुनर्निर्माण की साम्राज्यवादी परियोजना और स्थानीय प्रतिक्रियावादी ताकतों के बीच एक तीसरा विकल्प है, जो तथाकथित राष्ट्रवादी-राज्य यथास्थिति पर जोर देता है। इसने न केवल कुर्दिस्तान, बल्कि पूरे क्षेत्र को प्रभावित करते हुए एक क्रांतिकारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया शुरू की और पूरे मध्य पूर्व के लिए शांति और न्याय की उम्मीद जगाई।

कुर्दिस्तान और मध्य पूर्व के लोग राष्ट्र से पीड़ित अनगिनत लोगों म से एक हैं। यहाँ भी यह व्यवस्था थोपी गयी, वहां जातीय संहार, सांस्कृतिक कत्लेआम और जबरन विस्थापन के माध्यम से थोपी गयी है। एक राष्ट्र, एक व्यक्ति, एक ध्वज का यह विचार दुनिया भर म मानव इतिहास के कुछ सबसे बुरे नरसंहारों को जन्म देता है।

भारतीय उपमहाद्वीप ऐसे संस्था और विचारधारा की खतरनाक नासमझी का एक जीवंत उदाहरण है। भारत जो क्षेत्र, संस्कृति, राष्ट्रों, भाषाओं और धर्मों की एक समृद्ध एवम अविश्वसनीय विविधता प्रस्तुत करता है, जो अभी भी एकरूपता के प्रयासों का विरोध कर रही है।

भारत, अन्य देशों की तरह, जो औपनिवेशिक संघर्ष से गुजरे, तथाकथित स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण, समाज की आज़ादी का आश्वासन नहीं दे सकता। अगर कश्मीर की तरफ देखा जाये तो वहां आये दिन होते दंगे, चीन या पाकिस्तान के साथ विवादित सीमाओं पर मासूम लोगों की हत्याएं, अल्पसंख्यकों के खिलाफ हमेशा बढ़ती हिंसा, जातिगत उत्पीड़न, गहरी होती असमानताएँ, या पर्यावरण के विनाश. यह सब काफी है यह समझने के लिए कि राष्ट्र, अवाम की समस्याओं को हल करना तो दूर, उनकी समस्याओं की सबसे बड़ी जड़ बन सकता है।

ऐसे समय म जब पर्यावरण और समाज पर पूंजीवादी तबाही भयानक रूप ले रही है, जब राष्ट्रवादी विचारधारा फिर से और रक्तपात की धमकी दे रही है, जब पितृसत्तात्मक हिंसा अपने चरम पर है और आर्थिक असमानताएं गहरी हो रही हैं, अब्दुल्ला ओजालान और कुर्द स्वतंत्रता आंदोलन प्रस्तावित और अमल कर रहे हैं। यह एक ऐसा ठोस विकल्प है जो कुर्दिस्तान के अलावा भी कई संघर्षरत लोगों को प्रेरित कर रहा है।

हम उम्मीद करते हैं कि इस पुस्तिका से कुर्दिस्तान म प्रतिरोध और क्रांति की अंतर्दृष्टि मिलेगी और भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों और आंदोलनों और कुर्द स्वतंत्रता आंदोलन के बीच एक उपयोगी संवाद शुरू होगा।

1. कुर्दिस्तान के विषय में

कुर्दिस्तान कुल 450000 वर्ग किलोमीटर मे फैला है, जो कि पर्शियन, अज़ेरी, आर्मेनियन, अरब और एनातोलियन तुर्क के रिहायशी क्षेत्र से घिरा हुआ है। यह मध्य पूर्व का सबसे अधिक पहाड़, जंगल और जल समृद्ध क्षेत्र है और इसमें अनेक उपजाऊ मैदान हैं। हजारों सालों से यहां कृषि होती है। यह वह जगह है जहां निओलिथिक क्रांति की शुरुआत हुई, जब शिकारी समुदाय यहां बस गया और इन मैदानों में कृषि करने लगा। यह क्षेत्र कई सभ्यताओं का पालना भी कहलाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति की देन है कि कुर्द एक सजातीय समुदाय के रूप में अपने अस्तित्व को आज तक बचा पाये हैं। दूसरी तरफ कुर्दिश रिहाइश क्षेत्र की अनावृत्त स्थिति के कारण बाहरी ताकतों की इस पर लगातार नज़र रही और लोभ के चलते इस पर हमले और आक्रमण निरंतर होते रहे। कुर्द की भाषा पर निओलिथिक क्रांति का प्रभाव दिखता है, जो कि माना जाता है कि जागरोस और तौरस पहाड़ के क्षेत्र से शुरू हुई। कुर्द भाषा Indo-European भाषा परिवार से है।

पूर्व में इसकी भौगोलिक-रणनीतिक स्थिति के रहते इसके संसाधनों के बंटवारे के इस संघर्ष में यह देश एक मोहरे की तरह था और इसने कई युद्धों व आतंक को निमंत्रित किया। यह आज भी सत्य है और इतिहास के पूर्व में भी कुर्दिस्तान पर हमले हुए हैं। बाहरी शक्तियों ने आक्रमण किया है, जिसका विवरण इसके संपूर्ण इतिहास में मिलता है। 1000 और 1320 ईसा पूर्व के मध्य के असीरियन और सीथियन का आतंकपूर्ण शासन और अलेक्जडर की विजय यात्रा, इसके बेहतरीन उदाहरण हैं। इस्लाम के उद्भव से हुई अरब क्रांति ने कुर्दिस्तान के इस्लामीकरण का रास्ता बनाया। इस्लाम की तरह शांति का संदेश भी अरब राष्ट्रीय युद्ध की प्रभावी विचारधारा बना और यह कुर्दिस्तान में बहुत तेजी से फैला। इस्लाम तौरस और जागरौस पहाड़ों की तलहटी में भी पहुंच गया। जिन जनजातियों ने विरोध किया, उनको खत्म कर दिया गया। वर्ष 1000 तक इस्लाम कुर्दिस्तान में अपने शिखर पर पहुंच गया। फिर 13वीं और 14वीं शताब्दी में मंगोलों ने कुर्दिस्तान पर आक्रमण किया, जिसके फलस्वरूप पलायन और विस्थापन हुआ। सन 1514 की चल्दीरन की लड़ाई जिसमें

ओटोमन विजयी हुआ, के बाद साम्राज्य की प्राकृतिक पूर्वी सीमा और अधिक पूर्व की ओर खिसक गई। कस्र-ए-शिरीन के समझौते ने ईरान और तुर्की सीमाएं आधिकारिक तौर पर स्थापित कर दीं और कुर्दिस्तान के बंटवारे की नींव रख दी, जो आज तक मान्य है। मेसोपोटामिया और कुर्द अधिकांशतः ओटोमन साम्राज्य की सीमाओं में रहे। सन 1800 तक ओटोमन और कुर्द रियासतों के बीच बहुत हद तक शांति रही, जिसका आधार इस्लाम के सुन्नी संप्रदाय से था, जो कि इनमें समान था। एलिविटिक और जोरास्ट्रियन कुर्द हालांकि उपेक्षित रहे और विरोधस्वरूप पहाड़ों में रहे।

सन 1800 के बाद, जब तक कि ओटोमन साम्राज्य का पतन नहीं हुआ, कुर्दिस्तान में अनेक विद्रोह हुए, जिनमें अधिकांशतः का खूनी दमन किया गया। ओटोमन साम्राज्य के खत्म होने के पश्चात कुर्द का आगे और विभाजन हुआ, स्थिति बदतर और हिंसात्मक हुई। ब्रिटेन और फ्रांस की साम्राज्यवादी ताकत बढ़ने से मध्य पूर्व की सीमाओं का पुनरू निर्धारण हुआ और कुर्दिस्तान को तुर्की गणतंत्र, ईरानी तख्त-ए-ताऊस, इराक़ी साम्राज्य और सीरियन-फ्रेच के शासन के लिए छोड़ दिया। अपनी पूर्वी सीमाओं के एक बड़े हिस्से के नुकसान से प्रभावित होकर, तुर्की ने पूर्व साम्राज्य के अपने बचे हिस्सों को एक करने की कठोर नीति को लागू किया। तुर्की के अलावा बची किसी भी संस्कृति के नामोनिशान को भी मिटा दिया गया। यहां तक कि उन्होंने कुर्दिश भाषा के इस्तेमाल पर भी रोक लगा दी। ईरान में बढ़ रहे पहलवी राजवंश ने भी यही रास्ता अपनाया। ऊर्मिए से विद्रोही कुर्दिश जनजातीय नेता सिमको शिकाक और महाबाद से कुर्दिश गणतंत्र के लिए हो रहे मुक्ति संघर्ष का भी खूनी दमन कर दिया गया। शाह ने राष्ट्रीय फासीवादी युग की भावना से एक आतंकी शासन स्थापित किया, जोकि 20वीं सदी के शुरू में और उन्नत हुआ। कुर्दिस्तान के इराक और सीरियाई हिस्सों में ब्रिटेन और फ्रांस ने कुर्दिश मुक्ति के सभी प्रयास अपने अरब साथियों की मदद से कुचल दिए। यहां भी एक खूनी औपनिवेशिक शासन की स्थापना हुई। इस ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ में कुर्दिस्तान के स्वतंत्रता आंदोलन और उसकी विचारधाराओं के आधार की आगे चर्चा की गई है।

2. कुर्दिस्तान कामगार पार्टी का संघर्ष

30 साल से भी अधिक समय से कुर्दिस्तान कामगार पार्टी या कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी (PKK) कुर्दिश लोगों के न्यायिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। हमारा संघर्ष, हमारी लड़ाई स्वतंत्रता के लिए, ने कुर्द के सवालों को अंतर्राष्ट्रीय सवाल बनाया, जिसने संपूर्ण मध्य पूर्व को प्रभावित किया और कुर्द के प्रश्नों के समाधान की संभावना को दिखाया। 1970 में PKK की स्थापना के समय अंतर्राष्ट्रीय विचारधारा और राजनीतिक वातावरण में द्विपक्षीय विश्व का बोलबाला था, जिसमें शीतयुद्ध और समाजवादी और पूंजीवादी खेमों के बीच का संघर्ष था। च्झज्ञ उस समय पूरी दुनिया में चल रहे उपनिवेशवाद के खत्म होने के आंदोलनों से प्रेरित था। इस संदर्भ में हमने अपनी जमीन पर किसी विशेष स्थिति में अपने समाधान में सहमति देखने का प्रयास किया। च्झज्ञ ने कुर्द के सवाल को सिर्फ अपनी जनजातीय समस्या या अपनी किसी राष्ट्रीय समस्या के रूप में नहीं देखते हुए विश्वास किया कि यह लोकतंत्र और क्रांति का सवाल है। इन उद्देश्यों के साथ 1990 से हमने काम करने का निश्चय किया। हमने कुर्द के प्रश्न और आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था के प्रभुत्व के बीच के सामान्य संबंध को पहचाना। इस संबंध पर बिना प्रश्न किए और बिना इसे चुनौती दिए कोई समाधान संभव नहीं है। अन्यथा किसी नई निर्भरता में हमारे संलग्न होने की संभावना होगी। संजातीयता और राष्ट्रीयता के कुर्द के मुद्दों के मद्देनज़र कुर्द के प्रश्न, जिनकी जड़ इतिहास में गहरी हैं और समाज क नींव हैं, को देखने से यह समझ आता है कि इसका सिर्फ एक व्यावहारिक समाधान है रू राष्ट्र-राज्य की स्थापना, जो कि उस समय की पूंजीवादी आधुनिकता का आदर्श था। हमें हालांकि विश्वास नहीं है कि पहले से तैयार कोई राजनीतिक समाधान का खाका मध्य पूर्व के लोगों की स्थिति सुधारने में सफल होगा और टिकाऊ होगा। क्या राष्ट्रीयता और राष्ट्र-राज्य की धारणा ने मध्य पूर्व की कई समस्याओं का निर्माण नहीं किया है? इसलिए हमें इस आदर्शवादी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को करीब से देखना होगा और समझना होगा कि क्या हम किसी ऐसे समाधान का खाका तैयार कर सकते हैं जो कि राष्ट्रवाद के चंगुल में फंसने से बचाये और मध्य पूर्व के लिए बेहतर और उपयुक्त हो।

3. कुर्द और राष्ट्र-राज्य

पिछले कुछ दशकों में कुर्द सिर्फ प्रभावशाली ताकतों के और अपने अस्तित्व की पहचान के लिए नहीं, बल्कि अपने समाज को सामंतवाद के चंगुल से छुड़ाने के लिए भी संघर्ष कर रहा है। अतरू पुरानी जंजीरों के बदले नई ज़ंज़ीरों को लगाना या दमन को और बढ़ाने का कोई अर्थ नहीं है। सामंतवादी आधुनिकता के संदर्भ में राष्ट्र-राज्य की बुनियाद का यही अर्थ होगा। सामंतवादी आधुनिकता का विरोध किए बिना लोगों की आजादी के कोई मायने नहीं हैं। इसलिए कुर्द में राष्ट्र-राज्य की स्थापना का मेरे लिए विकल्प ही नहीं है। एक अलग राष्ट्र-राज्य की मांग शासन करने वाले वर्ग या पूंजीपतियों के हितों से जुड़ी है और लोगों के हितों को नहीं दर्शाती है, क्योंकि एक अलग राज्य से अन्याय को और बढ़ावा मिलेगा, साथ ही आजादी के अधिकार पर और अधिक अंकुश लग जायेगा। इसलिए सामंतवादी आधुनिकता को कमजोर कर उसे पीछे धकेलने में ही कुर्द समस्या का हल है। इसके पीछे ऐतिहासिक कारण भी हैं, जैसे इसकी सामाजिक विलक्षणता और वास्तविक विकास, साथ ही साथ कुर्द के रिहायशी क्षेत्र का चार देशों की सीमाओं के भीतर फैलाव, जिसकी वजह से इसका लोकतांत्रिक समाधान अपरिहार्य हो जाता है। इसके अलावा यह भी सच्चाई है कि संपूर्ण मध्य पूर्व लोकतांत्रिक न्यूनता के दौर में है। कुर्दी रिहाइश की भौगोलिक स्थिति के कारण कुर्द लोकतंत्र योजना की सफलता, संपूर्ण मध्य पूर्व के लोकतंत्रीकरण के लिए बड़ी आशा है। इसलिए इस लोकतांत्रिक योजना को लोकतंत्रीय संघवाद कह सकते हैं।

4. लोकतंत्रीय संघवाद

इस प्रकार के शासन या प्रशासन को गैर राज्य राजनीतिक शासन या राज्यरहित लोकतंत्र कहा जा सकता है। लोकतांत्रिक निर्णय की प्रक्रिया को जन प्रशासन की प्रक्रिया समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। राज्य सिर्फ शासन करता है, जबकि लोकतंत्र विधान के आधार पर शासन करता है। राज्य की बुनियाद में शक्ति है, जबकि लोकतंत्र का आधार सामूहिक सहमति है। राज्य के दफ्तर में हुक्मनामा चलता है, जो कि कहीं कहीं चुनाव प्रक्रिया से वैधानिक होता है।

लोकतंत्र में प्रत्यक्ष चुनाव किये जाते हैं। राज्य वैधानिक तरीके से दबाव का इस्तेमाल करता है। लोकतंत्र का आधार स्वैच्छिक सहभागिता है। लोकतंत्रीय संघ अन्य राजनीतिक समूह या घटकों के प्रति खुला है। वह लचीला, बहु-सांस्कृतिक, गैर-एकाधिकार और सहमति उन्मुखी है। पारिस्थितिकीय और स्त्रीवाद इसके मुख्य स्तंभ हैं। इस प्रकार के स्व-शासन के ढांचे में एक वैकल्पिक अर्थव्यवस्था आवश्यक है, जो कि समाज के संसाधनों के विकास को बढ़ावा दे, न कि शोषण को और इस तरह समाज की विविध आवश्यकताओं के साथ न्याय हो।

क. राजनीतिक परिदृश्य की विविधता और सहभागिता

समाज की विरोधाभासी संरचना के कारण राजनीतिक समूहों के लिए सीधा और आड़ा दोनों तरह का गठन अनिवार्य हो जाता है। इस दिशा में आवश्यक है कि माध्यमिक, क्षेत्रीय और स्थानीय समूहों को संतुलित किया जाए। तब ही उनमें से हरेक अपना प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी विशेष परिस्थिति से निबटने में सक्षम बनेगा और दूरगामी सामाजिक समस्याओं के यथोचित समाधान विकसित कर सकेगा। राजनीतिक सम्पर्क की मदद से अपनी सांस्कृतिक, संजातीय या राष्ट्रीय पहचान को अभिव्यक्त करने का हर किसी को स्वाभाविक अधिकार है। तथापि, इस अधिकार के लिए नैतिक और राजनीतिक समाज आवश्यक है। क्या राष्ट्र-राज्य, संघीय या लोकतंत्र- लोकतंत्रीय संघ राज्य सरकार की परंपराओं के संदर्भ में समझौता करने के लिए तैयार है। वह समान सहअस्तित्व की अनुमति देता है।

ख. समाज की विरासत और ऐतिहासिक ज्ञान का संचय

फिर, लोकतंत्रीय संघ, समाज के ऐतिहासिक अनुभव और उसकी सम्मिलित विरासत पर निर्भर करता है। वह कोई स्वैच्छिक आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि इतिहास और अनुभव का संचय है। वह किसी समाज के संपूर्ण जीवन की संतति है। राज्य व्यवस्था लगातार स्वयं को कद्र में रखने के प्रयास करती है, जिससे कि शक्ति पर उसके एकाधिकार की राह बने। संघवाद ठीक इसके विपरीत है, जिसमें कोई एक कद्र नहीं होता, बल्कि राजनीति के कद्र में पूरा समाज होता है। समाज का विषम रूप हर प्रकार के कद्रीयकरण का विरोधाभासी है। जिला स्तर पर कद्रीयकरण भी समाज में विरोध का कारण

बनता है। समाज की स्मृति में है कि लोग सदा से विभिन्न कुल, जाति और अन्य कई प्रकार के समुदायों की संघीय व्यवस्था में बिना किसी प्रमुख अंतर के, मुक्त भाव से रहते आये हैं। इस प्रकार अपनी आंतरिक स्वायत्तता को वह सुरक्षित रखने में सफल रहे हैं। यहां तक कि राजशाही के दौर में भी, जो उनकी आंतरिक सरकार हुआ करती थी, उन्होंने भी अपने विभिन्न हिस्सों, जिसमें धार्मिक सत्ता, आदिवासी परिषद, राजसत्ता और संघ भी थे, के स्व-शासन के लिए विविध व्यवस्था की थी। इस तरह यह समझना आवश्यक है कि राजशाही भी, जोकि देखने से कद्रीय व्यवस्था दिखायी पड़ती है, अपने संगठन के ढांचे में संघीय व्यवस्था का पालन करती है। कद्रीयकृत मॉडल वह प्रशासनिक व्यवस्था है जो समाज नहीं चाहता। इसके विपरीत एकाधिकार की वकालत करने वाले प्रशासनिक मॉडल के पक्ष में होते हैं।

ग. नैतिक और राजनीतिक समाज

पूंजीवादी एकाधिपत्य की सोच रखने वाले किसी कृत्रिम ढांचा विशेष के आधार पर समाज का कई श्रेणियों और शर्तों में वगीकरण कर देते हैं। इस तरह के समाज का अस्तित्व नहीं है, पर यह उनका प्रचार है। समाज अवश्य नैतिक और राजनीतिक है। आर्थिक, राजनीतिक, वैचारिक और सैन्य एकाधिपत्य का निर्माण, जो सिर्फ अतिरिक्त के संग्रहण का प्रयास है, समाज के बुनियादी स्वभाव के विपरीत है। इसमें मूल्यों का निर्माण नहीं होता और न ही ऐसी किसी क्रांति से एक नया समाज बनता है। समाज में नष्ट हो चुके नैतिक और राजनीतिक ताने-बाने के पुनरू निर्माण में इसकी सकारात्मक भूमिका है। शेष सब, नैतिक और राजनीतिक समाज की स्वतंत्र इच्छा से निर्धारित होता है। जैसा मैने पहले कहा कि पूंजीवादी आधुनिकता, राज्य के कद्रीयकरण को सुनिश्चित करती है। समाज के भीतर राजनीतिक और सैन्य शक्ति-कद्र उनके प्रभाव से वंचित रखे जाते हैं। राजशाही के विकल्प के रूप में राष्ट्र-राज्य ने समाज को कमजोर और निराश्रित बना कर रख दिया है। इस स्थिति में कानूनी आदेश और शांति की स्थिति का अर्थ सिर्फ बुर्जुआ शासन है। राष्ट्र-राज्य व्यवस्था में शक्ति अपने आप निर्धारित हो जाती है और आधुनिकता का यह बुनियादी प्रशासनिक आदर्श है। इसका अर्थ हुआ कि लोकतंत्र और गणतंत्र के विपरीत राष्ट्र-राज्य का अस्तित्व है। लोकतंत्र आधुनिकता का हमारा

प्रोजेक्ट आधुनिकता को जैसे हम समझते हैं, उसका वैकल्पिक प्रारूप है। बुनियादी राजनीतिक आदर्श की तरह यह लोकतंत्रीय गणतंत्र पर आधारित है। लोकतंत्र या आधुनिकता नैतिक और राजनीतिक समाज की जड़ है। हम जब तक समाज को एक समान अखंड इकाइयों की तरह देखने की गलती करते रहगे, लोकतंत्र या गणतंत्र को समझना मुश्किल होगा। आधुनिकता का इतिहास 49 शताब्दियों का इतिहास है, जहां सांस्कृतिक और शारीरिक नरसंहार हुआ, उस काल्पनिक एक समान समाज के नाम पर। दूसरी तरफ लोकतंत्रीय गणतंत्र इस इतिहास से स्वयं अपने आप अलग दिखाई देता है और इसके इतिहास में बहु-जातीय, बहु-सांस्कृतिक और विभिन्न राजनीतिक गठन पर बल है। अर्थव्यवस्था का संकट पूंजीवादी राष्ट्र-राज्य का अंतर्निहित परिणाम है। हालांकि नव-उदारवादियों के इस राष्ट्र-राज्य व्यवस्था को बदलने के सारे प्रयास असफल रहे हैं। मध्य पूर्व इसका उदाहरण है।

घ. लोकतांत्रिक संघवाद और लोकतंत्रीय राजनीति

राष्ट्र-राज्य की प्रशासन के संदर्भ में कद्रित, एकघातीय रैखिक और नौकरशाही रूपीय समझ और सत्ता के अभ्यास से विपरीत लोकतंत्रीय संघवाद ऐसे राजनीतिक स्वरूप को प्रस्तुत करता है, जहां समाज स्व-शासित है और जहां समस्त सामाजिक समूह और सभी सांस्कृतिक पहचान स्थानीय गोष्ठियों, सामान्य सम्मेलनों और परिषदों मेंअभिव्यक्त हो सकते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि परिषदों और चर्चाओं में निर्णय लेने की क्षमता बने।

प्रशासन जो अभिजात्य है और जो जमीन से जुड़ा नहीं है, वह अमान्य माना जाता है। लोकतांत्रिक शासन और सामाजिक कार्य की निगरानी परिषद के समूहों द्वारा की जाती है, जिनकी संरचना बहु-परतीय है और जो विविधता में एकता के लिए काम करते हैं, फिर चाहे वह सामान्य कद्रीय समन्वय परिषद हो (जैसे सभा, आयोग या कॉन्ग्रेस) या स्थानीय परिषद। लोकतंत्रीय संघवाद के लिए लोकतांत्रिक समाज आवश्यक है। यहीं से लोकतंत्र की शाखाएं उगगी। पूंजीवादी आधुनिकता राजनीति के स्थान या कहना चाहिए राजनीतिक संभावनाएं खत्म कर देती है, क्योंकि वह सत्ता और राज्य तंत्र की मदद से अपने को बनाये रखने के प्रयास में और अधिक कद्रीयकृत समाज के ताने-बाने

में फ़ैलती जाती है। जबकि लोकतंत्रीय राजनीति, समाज के विभिन्न तबकों और पहचान को समाज के भीतर व्यक्त करने और राजनीतिक शक्ति बनने का अवसर देने के साथ-साथ राजनीतिक समाज में बदलाव भी लाती है, जिससे राजनीति एक बार फिर सामाजिक जीवन का हिस्सा बनती है। राजनीति के बिना, राज्य का संकट हल नहीं हो सकता, क्योंकि राजनीतिक समाज को नकारने से राज्य व्यवस्था को ही बढ़ावा मिलता है।

लोकतंत्रीय संघवाद न सिर्फ राष्ट्र-राज्य व्यवस्था से उत्पन्न होने वाले संकट से निबटने में सक्षम है, बल्कि यह समाज के राजनीतिकरण का महत्वपूर्ण अस्त्र भी है। यह सरल और कार्यान्वयनीय भी है। प्रत्येक समुदाय, जातीयता, संस्कृति, धार्मिक समुदाय, बौद्धिक आंदोलन, आर्थिक इकाई इत्यादि स्वायत्त संरचित हो सकता है और राजनीतिक इकाई के रूप में व्यक्त भी हो सकता है। संघीय या स्वायत्त, स्व का विचार इस ढांचे में देखा जा सकता है और उसकी संभावना भी है। हर एक स्व को स्थानीय से वैश्विक की ओर संघ के रूप में बढ़ने का अवसर है। स्थानीय का बुनियादी घटक मुक्त चर्चा का अधिकार और निर्णय लेने का अधिकार है। हर एक स्व और संघीय इकाई अनूठी है, क्योंकि उसके पास प्रत्यक्ष लोकतंत्र के क्रियान्वयन का अवसर है, जिसे सहभागीय लोकतंत्र कहा जा सकता है। यह प्रत्यक्ष लोकतंत्र की व्यवहार्यता से सुदृढ़ होती है। इसकी बुनियादी भूमिका के पीछे का यह दूसरा कारण है। एक तरफ जहां राष्ट्र-राज्य प्रत्यक्ष लोकतंत्र के विरोध में है या उसके खंडन में है, लोकतंत्रीय संघवाद में प्रत्यक्ष लोकतंत्र का गठन होता है और क्रियान्वयन भी होता है। इसलिए जहां एक ओर राष्ट्र-राज्य उत्पीड़न, समरूपीकरण और समाज की लोकतंत्र से दूरी बनाने की दिशा में काम करता है, लोकतंत्रीय संघवाद का मॉडल मुक्ति, विविधता और लोकतंत्रीकरण के लिए काम करता है। संघीय इकाई, जो कि प्रत्यक्ष और सहभागीय लोकतंत्र की मूल कोशिका है, अनूठी है और आदर्श है, क्योंकि आवश्यक होने पर यह संघ संधि की इकाई में बदलाव के लिए लचीली है। हर वह राजनीतिक इकाई जोकि प्रत्यक्ष या सहभागीय लोकतंत्रीय इकाई पर आधारित है, लोकतांत्रिक है। इस तरह ऐसी राजनीतिक कार्यप्रणाली, जोकि स्थानीय इकाई या वैश्विक स्वरूप में विकसित हुई है, को लोकतंत्रीय राजनीति कहना ठीक होगा। सही लोकतांत्रिक व्यवस्था इन सब प्रक्रियाओं के

अनुभव का सूत्रीकरण है। इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि संघीय इकाई की आवश्यकता एक गांव या शहर की किसी सड़क में भी है।

उदाहरण के लिए प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक इकाई जैसे कि पारिस्थितिकी इकाई या गांव का समूह, इन्ह किसी मुक्त स्त्रियों की इकाई, आत्मरक्षा, युवा, शिक्षा, कला, स्वास्थ्य, एकजुटता और आर्थिक इकाई इत्यादि के साथ संगठित होना होगा। इस नई इकाई को हम आसानी से संघीय इकाई या संघ कह सकते हैं। चूंकि इस व्यवस्था को स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर लागू किया जा सकता है, यह आसानी से देखा जा सकता है कि समावेशी या लोकतांत्रिक संघ व्यवस्था क्या है?

ड़. लोकतंत्रीय संघवाद और आत्मरक्षा

यकीनन राष्ट्र-राज्य एक सैन्य संरचनात्मक इकाई है। राष्ट्र-राज्य अंततरू हर प्रकार के आंतरिक और बाहरी युद्ध का ही परिणाम है। मौजूदा कोई भी राष्ट्र-राज्य अपने आप यूं ही अस्तित्व में नहीं आया, हर किसी के अस्तित्व के पीछे युद्ध के आलेख दर्ज हैं। यह प्रक्रिया सिर्फ उनकी स्थापना तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे पूरे समाज का शस्त्रीकरण भी है। राज्य का असैनिक या तथाकथित सभ्य नेतृत्व सैन्य साधन का ही एक उप-साधन मात्र है। उदारवादी लोकतंत्र अपने सैन्य ढांचों को लोकतांत्रिक और उदारवादी रंग में रंग कर रखते हैं, परंतु खुद की व्यवस्था से उत्पन्न संकट के हल के लिए वह इसके शक्ति प्रदर्शन से परहेज़ नहीं करते।

राष्ट्र-राज्य के स्वभाव में ही शक्ति का दुरुपयोग है। तानाशाही राष्ट्र राज्य व्यवस्था का शुद्ध रूप है। इस सैन्यीकरण को आत्मरक्षा की मदद से पीछे धकेला जा सकता है। समाज जिसमें आत्मरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है अपनी पहचान, लोकतांत्रिक निर्णय प्रक्रिया की क्षमता और अपने राजनीतिक स्वभाव को खो देते हैं, इसलिए समाज में आत्मरक्षा सिर्फ सेना के विस्तार तक सीमित नहीं है। यह अपनी पहचान, अपनी राजनीतिक जागरुकता और लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया की रक्षा करने में सक्षम होना चाहिए, तभी हम आत्मरक्षा की बात कर सकते हैं। इस पृष्ठभूमि म, लोकतांत्रिक संघवाद को समाज की आत्मरक्षा की व्यवस्था भी कहा जा सकता है। आत्मरक्षा में नेतृत्व की बात सिर्फ तब है,

जब वह लोकतांत्रिक राजनीति पर आधारित हो और उसकी स्वयं की व्यवस्था का आधार संघवादी ढांचा हो। जैसे कि कई सारे नेतागिरी के तंत्र और गिरोह (व्यावसायिक, आथिक, औद्योगिक, ऊर्जा, राष्ट्र-राज्य और आदर्श एकाधिकार के) हैं, वैसे ही कई संघीय, आत्मरक्षा और लोकतंत्रीय राजनीतिक तंत्र विकसित होने चाहिए। इसका अर्थ विशेषकर यह हुआ कि संघवाद के सामाजिक नमूने में आंतरिक और बाह्य संरचना को सुनिश्चित करने के लिए सैन्य शक्ति के लिए एकमात्र सेना पर निर्भरता नहीं होगी। इन पर लोकतांत्रिक संस्थाओं का प्रत्यक्ष अधिकार रहेगा। समाज को स्वयं इनका कर्तव्य निश्चित करना होगा। इनका एक काम तो आंतरिक और बाह्य हस्तक्षेपों से समाज की स्वतंत्र निर्णय क्षमता की रक्षा करना होगा। इकाइयों में निर्देश की प्रक्रिया लोकतंत्रीय राजनीतिक संस्था और हर इकाई के सदस्यों, दोनों के दोहरे निरीक्षण से गुजरना होगा। यदि सुझाव के स्वीकार करने और अमल में लाने की प्रक्रिया में बदलाव की आवश्यकता लगेगी, तो बदलाव आसानी से हो सकेगा।

च. लोकतंत्रीय संघवाद बरक्स नेतृत्व की चाह

लोकतंत्रीय संघवाद में किसी प्रकार के नेतृत्व की चाह के लिए कोई स्थान नहीं है। विशेषकर आदर्श स्थिति में यह सत्य है। किसी विशेष सभ्यता में नेतृत्व के नियम का पालन किया जाता है। लोकतांत्रिक सभ्यता नेतृत्व की सत्ता और विचारधारा को खारिज करती है। अभिव्यक्ति का कोई भी तरीका जो कि लोकतंत्रीय स्व-शासन की सीमाओं के पार जाता है, स्व-शासन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अनुपयुक्त उदाहरण है। सामाजिक मामलों को सामूहिक तौर पर संभालने के लिए आपसी समझ, विरोधाभासी विचार का सम्मान और लोकतांत्रिक निर्णय की प्रक्रिया आवश्यक है। पूंजीवादी आधुनिकता में शासन व्यवस्था की समझ से यह उलट है, जहां नौकरशाही के मनमाने निर्णय, जो राष्ट्र-राज्य व्यवस्था की पहचान है, लोकतांत्रिक सभ्यता और शासन की आधुनिक समझ, जो नैतिकता की बुनियाद की दिशा में काम करती है, के विपरीत है। लोकतंत्रीय संघवाद म, नेतृत्ववादी संस्थाओं को नैतिक वैधता की आवश्यकता नहीं है, इसलिए वह नेतृत्व की अपेक्षा नहीं करतीं।

छ. विश्व लोकतंत्रीय परिसंघ संघ

हालांकि लोकतंत्रीय संघवाद में बात स्थानीय स्तर की है, परंतु संघवाद को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के विचार को खारिज नहीं किया गया है। आवश्यकता है कि हम संयुक्त राष्ट्र संघ, महाशक्तियों के नेतृत्व से राष्ट्र-राज्य की सहयोगी संस्था के विरोधस्वरूप विश्व लोकतांत्रिक संघवाद परिसंघ के रूप में एक राष्ट्रीय बौद्धिक समाज का मंच तैयार कर। यदि हम अधिक सुरक्षित, शांत, पारिस्थितिकीय, सही और उत्पादक विश्व चाहते हैं तो यह जरूरी है कि हम भिन्न-भिन्न श्रेणियों के व्यापक समुदायों को विश्व लोकतंत्रीय परिसंघ के अंतर्गत एकत्रित कर।

ज. निष्कर्ष

राष्ट्र-राज्य शासन से उलट लोकतंत्रीय संघवाद को स्व-शासन के रूप में समझा जा सकता है। लोकतंत्रीय संघवाद और राष्ट्र-राज्य व्यवस्था के बीच का रिश्ता न तो निरंतर चलने वाला युद्ध है, न ही पहले का दूसरे में विलय है। यह सिद्धांत का अंतर है जिसके आधार में दो अलग इकाइयों के सह-अस्तित्व की स्वीकार्यता है। राष्ट्र-राज्य व्यवस्था से नहीं, बल्कि सामान्य तौर पर पूंजीवादी आधुनिकता से भी, हस्तक्षेप और हमला होने की स्थिति म, लोकतंत्रीय संघवाद के पास सदा आत्म सुरक्षाबल होना आवश्यक है। लोकतंत्रीय संघ किसी भी राष्ट्र-राज्य से युद्ध नहीं चाहता, परंतु उसके स्वतंत्र अस्तित्व को खत्म करने के प्रयास के समय वह निष्क्रिय भी नहीं बैठ सकता। किसी भी क्रांति से या किसी नए राज्य की सथापना से सम्पोषणीय बदलाव नहीं होता। लम्बे समय में स्वतंत्रता और न्याय सिर्फ किसी लोकतंत्रीय संघ व्यवस्था में ही पूर्ण किए जा सकते हैं। राज्य का न तो पूर्ण अस्वीकार और न ही पर मान्यता, किसी सभ्य समाज के लोकतांत्रिक प्रयासों में सहायक है। राज्य से परे देखना, विशेषकर राष्ट्र-राज्य म, एक लम्बी प्रक्रिया है। राज्य से अलग देखने की प्रक्रिया तब ही होगी, जबकि लोकतंत्रीय संघवाद किसी सामाजिक समस्या के संदर्भ में समस्या सुलझाने की क्षमता सिद्ध करेगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि राष्ट्र-राज्य के हमलों को स्वीकार किया जाए। लोकतंत्रीय संघवाद अपने-अपने सुरक्षाबल को बनाकर रखगा। लोकतंत्रीय संघ अपने आप को सिर्फ किसी एक विशेष

क्षेत्र में सीमित करके नहीं रखेगा, यह हमेशा सीमाओं के पार जहां सामाजिक आवश्यकता है, वहां पर संघ के निर्माण की दिशा में काम करेगा।

5. लोकतंत्रीय संघ के सिद्धांत

क. लोगों के अपने निर्णय लेने के अधिकार में उनके अपने राज्य का भी अधिकार है। हालांकि किसी राज्य की स्थापना से वहां रहने वाले लोगों की स्वतंत्रता में कुछ बढ़ोतरी नहीं होती। यूनाइटेट नेशन की व्यवस्था जो कि राष्ट्र-राज्य पर आधारित है, अपर्याप्त रही। इस बीच राष्ट्र-राज्य किसी भी सामाजिक विकास के लिए गम्भीर रुकावट बने। लोकतंत्रीय संघवाद उत्पीड़ित लोगों के लिए एक विरोधाभासी आदर्श है।

ख. लोकतंत्रीय संघवाद एक राजकीय सामाजिक आदर्श स्थिति है। यह राज्य से नियंत्रित नहीं होता। साथ ही लोकतंत्रीय संघवाद लोकतंत्र और संस्कृति की संस्था है।

ग. लोकतंत्रीय संघवाद जमीनी स्तर की सहभागिता पर आधारित है। इसके निर्णय लेने की प्रक्रिया समुदाय पर निर्भर करती है। समुदाय, जो अपने प्रतिनिधि आमसभा में भेजते हैं, की इच्छा के अनुरूप उच्च स्तर पर सिर्फ समन्वय का काम और क्रियान्वयन का काम होता है। 1 साल के लिए वह उनके प्रवक्ता और कार्यकारी संस्था होते हैं। हालांकि मूलभूत निर्णय लेने का अधिकार स्थानीय जमीनी स्तर की संस्थाओं के पास होता है।

घ. मध्य पूर्व में पूंजीवादी व्यवस्था और उसकी राजशाही ताकत जोकि लोकतंत्र का सिर्फ नुकसान करती है, के माध्यम से लोकतंत्र को थोपा नहीं जा सकता। जमीनी स्तर पर लोकतंत्र का प्रचार जरूरी है। यही एक रास्ता है जिससे विविध जातीय समूह, धर्म और वर्ग के अंतर को मिटाया जा सकता है। यह समाज के पारंपरिक संघ के ढांचे के साथ भी मेल खाता है।

ड़. कुर्दिस्तान में लोकतंत्रीय संघवाद राष्ट्र विरोधी आंदोलन भी है। इसका उद्देश्य बिना वर्तमान राजनीतिक सीमाओं पर प्रश्न किए कुर्दिस्तान के हर हिस्से में लोकतंत्र के विस्तार के द्वारा लोगों के आत्मरक्षा के अधिकार को यथार्थ

करना है। इसका उद्देश्य कुर्द राष्ट्र-राज्य की स्थापना नहीं है। यह आंदोलन ईरान, तुर्क, सीरिया और इराक जो कि कुर्द के लिए खुले हैं, में संघात्मक ढांचे को स्थापित करना चाहता है। साथ ही कुर्दिस्तान के चारों हिस्सों में एक छतरी के अंतर्गत संघ बनाना चाहता है।

6. लोकतंत्रीय संघवाद अभ्यास में

2005 में लोकतंत्रीय संघवाद की घोषणा के साथ, कुर्द स्वतंत्रता आंदोलन ने अपने प्रयास कुर्द के सभी हिस्सों में फैलाये और जमीनी स्तर पर काम करने वाली संस्थाओं का विकास किया। राज्य मॉडल के विकल्प के रूप में लोगों के स्वयंसेवी संगठन रणनीतिगत लक्ष्य और संघर्ष की राह पर आगे बढ़े। कुर्गिस्तान जन कांग्रेस (Kurdish Kongra Gel), कुर्गिस्तान कमेटी यूनियन (Kurdish Koma Civaken Kurdistane] KCK) की स्थापना संस्थाओं के एक संघ के रूप में की गई, जिसमें कुर्द समाज के सभी घटक अपने को संगठित कर सक और व्यक्त कर सक। सांप्रदायिक, लोकतांत्रिक और संघीय ढांचा इस विस्तृत सामाजिक संस्था की बुनियाद है। इस मॉडल की प्राथमिकता राज्य के साथ संवाद की खोज नहीं है, बल्कि अभी और यहीं, लोकतांत्रिक, पारिस्थितिकीय, नारी मुक्त समाज की स्थापना और विस्तार है। हालांकि, यदि कुर्द के लोगों की लोकतांत्रिक इच्छा को मान्यता और संबंधित राष्ट्र-राज्य का बुनियादी तौर पर लोकतांत्रिकरण होता है तो कुर्द की ओर से संवाद में संलग्न होने की स्वीकृति है। प्राथमिकता लोकतांत्रिक स्वशासन का निर्णय और आत्मरक्षा के ढांचे की वैधता होगी। कुर्गिस्तान के सभी हिस्सों और पूरे क्षेत्रफल के लोगों का लोकतांत्रिक स्वायत्तता के लिए और इस तरह स्वशासन के लिए संघर्ष है। किस स्थिति में वो यह कर सकते हैं, यह क्षेत्र-दर-क्षेत्र बदलता है। लोकतांत्रिक स्वायत्तता की स्थापना का लक्ष्य एक होने के बाद भी स्वशासन की दिशा में उठाए गए कदम और प्रकार अलग-अलग जगह पर अलग-अलग होते हैं।

क. उत्तरी कुर्गिस्तान में लोकतांत्रिक स्वायत्तता

उत्तरी कुर्गिस्तान (बाकुर) में सांप्रदायिक संघीय स्वशासन का ढांचा तुर्की में

निरंकुश राज्य व्यवस्था के विरूद्ध राजनीतिक संघर्ष से जुड़ा हुआ है। समितीय ढांचे, सहकारी, शैक्षणिक परियोजना कुर्द भाषा में विविध जमीनी स्तर की संस्थाओं में स्थापित किए गए। समाज ने अपने आसपास योजनाओं का निर्माण किया और अपनी स्थानीय राजनीति को विकसित किया। अधिक से अधिक लोगों की राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जनभागीदारी बढ़ी। इस तरह धीरे-धीरे रोजमर्रा के जीवन में राज्य का प्रत्यक्ष प्रभाव कम होने लगा। इसी समय लोकतांत्रिक ताकतों का एक बड़ा संगठन उत्तरी कुर्गिस्तान में लोकतांत्रिक सामाजिक कांग्रेस (DTK) और तुर्की में जन लोकतांत्रिक कांग्रेस (HDK) के द्वारा बनाया गया। उत्तरी कुर्गिस्तान से अन्य क्षेत्रों में भी सामाजिक चेतना फैली, जिस एकेपी एर्दोगन शासन के विरोध का सामना करना पड़ा। इसक फ़लस्वरूप एकेपी का कट्टरवाद और उजागर होकर कई सामूहिक नरसंहार, जेल, कठोर अंकुश, फांसी और पूरे जिले पर बमबारी के रूप में सामने आया। राज्य व्यवस्था ने लोकतंत्र निर्माण प्रक्रिया का गला घोट दिया और समाज की इच्छाशक्ति को तोड़ दिया। चुनाव और संसदीय विपक्ष इन हमलों को बंद करने में सक्षम नहीं रहा। कुर्गिस्तान में कई समुदायों के लोगों ने अंततः स्वशासन का निर्णय, अभ्यास और बचाव अगस्त 2015 से वर्ष 2016 तक किया, जबकि तुर्क सेना उनकी धर-पकड़ कर रही थी, कैद में डाल रही थी और उन पर बम बरसा रही थी। इस विरोध की प्रेरणा लोकतांत्रिक संघवाद और कोबेन के सफल प्रतिवाद से ली गई थी। मुश्किल हालातों और लगातार मिलने वाली नाकामियों के बावजूद सामाजिक विरोध सतत बना रहा।

ख. लोकतंत्रीय संघवाद के कद्र की तरह मेक्समूर कैंप

मेक्समूर कैंप कुर्द का एक शरणार्थी शिविर है, जो कि दक्षिणी कुर्गिस्तान में मूसिल और केरकुक के बीच इसी नाम के शहर के समीप है। करीब 12500 लोग जो कि मूलतः उत्तरी कुर्गिस्तान के हैं, इन शिविरों में रहते हैं। मेक्समूर कैंप की आबादी को 1990 के शुरू में तुर्की सेना ने उत्तरी कुर्गिस्तान के गांव से खदेड़ा। चूंकि यह युद्ध लड़ना नहीं चाहते थे, बल्कि स्वतंत्र और शांत जीवन जीना चाहते थे, इन्होंने तय किया कि अन्य की भांति यह महानगरों में नहीं जायगे, बल्कि विस्थापन के माध्यम से अपना विरोध दिखायगे। उन्होंने तुर्की छोड़ने का निर्णय लिया, जब तक कि तुर्की कुर्द के अधिकारों को मान्यता देने

के लिए तैयार नहीं हो। दक्षिणी कुर्गिस्तान से पलायन के कई सालों बाद यह समुदाय 1998 में मेक्समूर कैंप पहुंचा। हालांकि शासकों ने उनको मरुस्थल के किनारे मरने के लिए छोड़ दिया था, शरणार्थियों ने गरीबी, निरंतर होते हमलों और खतरे के बावजूद अपने लिए हरा-भरा इलाका तैयार कर लिया, जो कि शरणार्थियों की आवश्यकता से कहीं आगे शांति और सामूहिक दृढ़ निश्चय का स्थान बन गया है।

कैंप शुरू से ही अपने आत्म-बल के लिए संघर्ष कर रहा है। इस सबके ऊपर, इस संघर्ष का लक्ष्य उनकी अपनी मुक्ति भी है। समुदाय का संगठन अब्दुल्ला ओकलान के विचारों और जमीनी स्तर पर आदर्श लोकतंत्र, महिला स्वतंत्रता और पारिस्थितिकीय की उनकी प्रेरणा के अनुसार है। सीधा-सीधा कह तो इसका अर्थ है कि मैक्समूर कैंप का सारा काम स्वयं लोगों द्वारा किया जाता है। इसके लिए पांचों जिलों में चार संस्थाओं की स्थापना की गई, जिनका उद्देश्य सभी रहवासियों के जीवन की बुनियादी व्यवस्था और नई उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं को सम्मिलित प्रयासों से संतुष्ट करना है। जिला परिषद द्वारा समितियों को जोड़कर एक सम्मिलित परिषद, जन परिषद बनती है, जिसमें कि विभिन्न कामों के लिए आयोग और समितियां होती हैं।

जीवन के कुछ क्षेत्र जैसे कि शिक्षा या स्वास्थ्य है, इनको मोटा-मोटी अलग किया गया है कि यह स्वयं अपनी समिति बना सक जो कि आम जन परिषद से जुड़ी होती हैं। सभी स्तर पर और अधिकांश क्षेत्रों में स्त्री और युवा स्वायत्त रूप से व्यवस्था देखते हैं। स्त्रियों का एक स्वायत्त ढांचा है जैसे कि महिला कद्र, महिला अकादमी और महिला परिषद। कई प्रोजेक्ट इनके द्वारा शुरू किए गए, उनकी अपनी कार्यशाला, महिला अखबार, महिला प्रोजेक्ट की वित्तीय मदद के लिए दुकान, कला और सांस्कृतिक स्थान, किंडरगार्डन या प्री-स्कूल इत्यादि।

ग. नरसंहार का उत्तर- सगल में यज़ीदियों की लोकतांत्रिक स्वयं-संस्था

सगल क्षेत्र (दक्षिणी कुर्गिस्तान इराक़) यजीदी कुर्द की रिहाइश का मुख्य क्षेत्र है, जहां इनके कई अभयारण्य स्थित हैं और यजीदी कुर्द के विरूद्ध हुए पिछले 73 नरसंहार के वंशजों ने यहां शरण ली। सगल (अरबी भाषा में सिंजर) की यजीदी आबादी पूर्व में हत्या और नरसंहार की शिकार रही। हाल के समय में 2014 में

तथाकथित आईएस (IS) ने इस क्षेत्र में नरसंहार किया, जोकि जातिगत और धार्मिक अल्पसंख्यक वर्ग का अंतिम, पारंपरिक रूप से मुख्य रिहायशी क्षेत्र है। आईएस को अप्रत्याशित विरोध का सामना करना पड़ा, जिसके कारण सगल का बड़ा क्षेत्र वे अपने कब्जे में नहीं कर सके। आत्मरक्षा के इन अनुभवों से बचे हुए लोगों में हिम्मत जागी और उन्होंने स्वशासित राजनीति के निर्माण के साथ-साथ सेना का भी निर्माण किया।

पिछले 8 सालों से सगल के लोग अपना लोकतांत्रिक स्वायत्त प्रशासन चला रहे हैं। इसके मूल में जमीन पर काम कर रही लोकतांत्रिक समितियां और परिषद हैं, जोकि जीवन के सभी क्षेत्रों, सुरक्षा से लेकर स्वास्थ्य, शिक्षा और महिला संगठन संभाल रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन जोकि लोगों की नब्ज पहचानता है वह है सगल की लोकतांत्रिक स्वायत्त प्रशासन परिषद, कार्यपालिका आयोग के साथ, जोकि व्यावहारिक क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार है। यह व्यवस्था लोकतंत्रीय संघवाद से प्रेरित है। यज़ीद समुदाय के अनुसार स्वायत्त स्व-प्रशासन का ध्येय, सगल के सभी पारंपरिक विविध-जातीय और विविध-धार्मिक रहवासियों के सम्मिलित संगठन के रूप में काम करना है। वो सब, जिन्होंने तथाकथित आईएस के आतंक और अपराधों का समर्थन नहीं किया, उनकी वापसी और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, इसका घोषित मुख्य लक्ष्य है।

घ. उत्तरी और पूर्वी सीरिया का स्वायत्त प्रशासन (रोजावा)

असद शासन के विरूद्ध 19 जलाई 2012 को हुए लोकप्रिय विद्रोह ने रोजावा में बगावत की नींव रखी। उसके बाद के दिनों में सीरिया की सरकार को रोजावा के बड़े हिस्से से खदेड़ दिया गया। जमीनी लोकतांत्रिक जन परिषद ने आबादी की आपूर्ति और सुरक्षा का जिम्मा उठाया। लोकतंत्रीय मॉडल के आधार पर जनवरी 2014 में सीजीरे, कोबानी और एफ्रिन तीन कुर्द के हिस्से बनाये गये। कुर्द, अरबी, सीरियाई, शेल्देयंसी, अरमेनी, अर्मेनिआई, तुर्की और चेचेनी, जो रोजावा में रहते थे, ने लोकतांत्रिक स्वायत्तता की घोषणा कर दी और एक नई सामाजिक व्यवस्था को अपनाया। इसने बहुलवादी और लोकतांत्रिक व्यवस्था की नींव रखी। समाज के हर हिस्से में स्त्री-स्वतंत्रता और स्व-प्रबंधन की सुनिश्चतता इस नई राजनीतिक निर्माण व्यवस्था का महत्वपूर्ण घटक है। सीरिया

की राजनीतिक उठापटक की शुरुआत से ही रोजावा में लोकतांत्रिक स्व-प्रशासन एक सतत निर्माण की प्रक्रिया है। नगर निगम, परिषद, सहकारिता, आयोग और विभिन्न प्रकार के संस्थान हर क्षेत्र में स्थापित किये गए, जिससे लोगों के जीवन की जरूरत सुरक्षित हो सक और सह-अस्तित्व की नई संस्कृति पनप सके। हालांकि इस्लामिक स्टेट, तुर्की और सीरिया राज्य के निरंतर हमलों के कारण युद्ध और उसके फलस्वरूप विस्थापन और अनिश्चितता के खतरों के रहते समाज में स्व-शासन के ताने-बाने को बनाकर रखने की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। अरब बाहुल्य के क्षेत्र जैसे रक्का, मिनबिक, तबक़ा और दईर-एज़-ज़ोर की मुक्ति से स्व-शासन का क्षेत्र फैला है, कि हम आज उत्तरी और पूर्वी सीरिया की स्वायत्त स्व-शासन की बात कर पा रहे हैं।

ड़. बासुर और राझेलात में लोकतांत्रिक स्वायत्तता के लिए संघर्ष

दक्षिणी कुर्द (बासुर) में पिछले दो दशकों में स्त्री और समाज के कई प्रकार के स्वयंसेवी संगठन स्थापित हुए हैं। महिला संगठन आरजेएके RJAK (रेक्सिस्तिना जीनेन अज़ादिग्वाज एन कुर्दिस्तान Rexistina Jinen Azadixwaz en Kurdistane), राजनीतिक आंदोलन तेवगेरा आज़ादी Tevgera Azadi, साथ ही कई संस्थान, पहल और समूह लोकतंत्रीय संघवाद की धारणा की समाज में समझ बनाने और अमल में लाने के लिए काम कर रहे हैं। स्वायत्त महिला ढांचा और संगठन के निर्माण द्वारा आरजेएके RJAK ने स्वयंसेवी संगठनों में महिला के दृष्टिकोण को मजबूत किया है, साथ ही महिलाओं को समाज और राजनीति में पितृसत्ता के दबाव से उबरने के लिए एकजुट होने में मदद की है। ऐसे सभी संगठन जो कि जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया के निर्माण के लिए काम कर रहे हैं और तुर्की के दक्षिणी कुर्द में चल रह रोजगार के प्रयासों के विरूद्ध खड़े हैं, उनको लगातार दक्षिणी कुर्द के स्वायत्तता वाले क्षेत्रों में केडीपी सरकार के दमन और गिरफ्तारियों का सामना करना पड़ता है। फिर भी कुर्द के दलों में लोकतांत्रिक समझ को बनाने के प्रयास कि कुर्द राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो सके, जारी है। कुर्द के विभिन्न स्थानों के कई राजनीतिक दलों और आंदोलन कार्यों, साथ ही साथ महिला आंदोलन, कोंगरा स्टार Kongra Star का अपना दफ्तर और अपना प्रतिनिधित्व बासुर में है। इन सबका मुख्य प्रयास कुर्द और

देश के सभी हिस्सों के दूसरे आबादी समूहों में लिंग, आजादी, पारिस्थितिकीय और बुनियादी लोकतंत्र की समझ बनाना है।

पूर्वी कुर्द (राझेलात) में ईरान के सीमाक्षेत्र पर, लोकतांत्रिक स्वायत्तता के विस्तार के लिए संघर्ष जारी है। ईरान की सशक्त आत्मक सरकार जोकि किसी भी प्रकार का विरोध करने पर जेल, अत्याचार या मृत्युदंड देती है, किसी भी सामाजिक संगठन को सम्भव करती है। फिर भी लगातार कई बार सरकार के खिलाफ आंदोलन हुए हैं और जमीनी स्तर पर संगठन बनाने के प्रयास हुए हैं। हालांकि उनको सम्भव करने के लिए भी बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा है और सबकुछ गुप्त रखना पड़ा है। इतने कठोर दमन के बावजूद, पूर्वी कुर्द महिला संगठन केजेएआर (KJAR) जिसकी स्थापना 2014 में हुई और पूर्वी कुर्द का लोकतांत्रिक और मुक्त समाज (KODAR) राझेलात और ऐसी आबादी जो निर्वासन में है, को संगठित करने का और उनके बीच शिक्षा का कार्य जारी रखे हुए है।

यह संगठन समाज के हर क्षेत्र में यह लक्ष्य रखकर स्वशासन का ढांचा तैयार रहे हैं कि इससे भविष्य में राष्ट्र-राज्य व्यवस्था से लोकतंत्रीय संघवाद में होने वाले बदलाव की राह प्रशस्त होगी। बलूच, अरब, अज़रबैज़ान, तुर्क और क्षेत्र के विभिन्न आस्था वाले लोगों के साथ मिलकर वे ईरान में एक लोकतांत्रिक राष्ट्र बनान के लिए काम कर रहे हैं। महिला संगठन केजेएआर ज्ञश्र।ट राजनीतिक कैदियों और पत्थरबाजी व अन्य प्रकार की लैंगिक हिंसा, मुख्यतरू शासन द्वारा समाज में की गयी, के विरूद्ध समन्वय बनाने का काम करता है। इसी के साथ संगठन अपने क्षेत्र में महिलाओं को संगठित करके व शिक्षा के द्वारा समाज, जोकि एक समय में पूर्व में स्त्री कद्रित समाज रहा है, में उदारवादी-समतावादी मूल्यों को पुनर्जीवित और मजबूत करने का काम करता है। आखिरी विरोध सितंबर 2022 में भड़का, जब एक 22 वर्षीय कुर्द महिला जीना माहसा अमीन की हत्या हुई। दो मुख्य नारे जो ईरान के लगभग सभी शहरों में सड़कों पर आने वाले कई दिनों तक गूंजते रहे, वे थे श्शजिन, जियां, आज़ादीश्श (स्त्री, जीवन, आज़ादी)।

लेखक अब्दुला ओकलान के विषय में

अब्दुल्ला ओकलान का जन्म 1949 में हुआ और उन्होंने अंकारा से राजनीतिक विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने कुर्द स्वतंत्रता संग्राम का सक्रिय नेतृत्व 1978 में पीकेके च्झज्ञ के प्रमख के रूप में इसकी स्थापना के समय से 15 फरवरी 1999 को उनके अपहरण होने तक किया। उनको एक बेहतरीन रणनीतिज्ञ माना जाता है और कुर्द के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रतिनिधि। इमराह द्वीप जेल में अपने एकांतवास के दौरान उन्होंने 10 से अधिक किताब लिखीं, इन किताबों ने कुर्द की राजनीति में क्रांति का काम किया। कई बार उन्होंने गुरिल्ला युद्ध के एकतरफा युद्धविराम की पहल की और कुर्द समस्या के रचनात्मक राजनीतिक हल प्रस्तुत किये। तथाकथित "शाति प्रक्रियाश्श 2009 में तब शुरू हुई, जब तुर्की सरकार ने ओकलान के कुर्द समस्या के राजनीतिक हल के प्रस्ताव पर सहमति दी। यह प्रक्रिया अप्रैल 2015 में तब रुक गयी, जब तुर्की सरकार ने एकतरफ़ा निर्णय लेकर बातचीत को रोक दिया और अत्याचार, हिंसा तथा इंकार की अपनी नीति पर लौट आयी। 27 जलाई 2011 से ओकलान को पकड़कर इमराली द्वीप की जेल में पूरी तरह एकांत में रखा हुआ है। 5 अप्रैल 2015 से पूरी जेल का दृश्य ही नहीं, पूरी दुनिया से संपर्क काट दिया गया है।

लोकतांत्रिक आधुनिकता अकादमी के विषय में

कुर्द स्वतंत्रता आंदोलन ने लोकतांत्रिक आधुनिकता का जो दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, वो आज की प्रचलित पूंजीवादी पितृसत्ता के समाधान को प्रस्तुत करता है। आदर्श लोकतांत्रिक आधुनिकता और उसके 3 स्तंभ - पूर्ण लोकतंत्र, स्त्री मुक्ति और पारिस्थकीय का विचार सिर्फ कुर्द और मध्य पूर्व के समाज के लिए ही नहीं, बल्कि इसके बाहर भी प्रासंगिक है। कुर्द की क्रांति के अनुभव ने दुनियाभर की लोकतांत्रिक और समाजवादी ताकतों को आदर्श लोकतांत्रिक आधुनिकता के लिए नई दिशा और प्रेरणा दी। लोकतंत्रीय संघवाद में सामाजिक स्वयंसेवी- संगठनों की सफलता ने वर्तमान पूंजीवादी दुनिया से इतर उम्मीद और विश्वास जगाया है।

लोकतांत्रिक आधुनिकता की अकादमी के नाते, हम लोकतांत्रिक आधुनिकता के निर्माण में, शिक्षा के माध्यम से लोकतांत्रिक राजनीति, सामाजिक जागृति और नई राजनीतिक नैतिक चेतना, जो कि किसी मुक्त समाज की नींव है, की समझ बनाने में अपनी भूमिका देखते हैं। साथ ही, लोकतांत्रिक ताकतों के बीच नये तंत्र और संबंध बनाने के लिए भी काम करने की आवश्यकता को महसस कर रहे हैं, जोकि लोकतांत्रिक आधुनिकता के निर्माण के लिए आवश्यक है। गोष्ठियों और मंचों के निर्माण से अनुभवों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिदान को सुदृढ़ बनाने और वर्तमान संघर्ष को जोड़ने की दिशा में भी हम काम करना चाहते हैं।

लोकतांत्रिक आधुनिकता की अकादमी के नाते, हम लोकतांत्रिक आधुनिकता के निर्माण में, शिक्षा के माध्यम से लोकतांत्रिक राजनीति, सामाजिक जागृति और नई राजनीतिक नैतिक चेतना, जो कि किसी मुक्त समाज की नीव है, की समझ बनाने में अपनी भूमिका देखते हैं। साथ ही, लोकतांत्रिक ताकतों के बीच नये तंत्र और संबंध बनाने के लिए भी काम करने की आवश्यकता को महसस कर रहे हैं, जोकि लोकतांत्रिक आधुनिकता के निर्माण के लिए आवश्यक है। गोष्ठियों और मंचों के निर्माण से अनुभवों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिदान को सुदृढ़ बनाने और वर्तमान संघर्ष को जोड़ने की दिशा में भी हम काम करना चाहते हैं।

Email: info@democraticmodernity.com
Website: http//democraticmodernity.com

Academy of Democratic Modernity